पानी का संरक्षण करके ही भविष्य को सुरक्षित किया जा सकता है

कार्यक्रम में मौजूद किसान व अन्य। छाया-आज

(आज समाचार सेवा)
झांसी, 10 अक्टूबर। कृषि विज्ञान केन्द्र, भरारी पर संचालित निकरा योजना और केन्द्र के भ्रमण एवं निरीक्षण पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप महा निदेशक, (प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन) डा० एस० के० चौधरी किया गया, इस अवसर पर डा० ए० अरूनाचलम, निदेशक, काफ्री, झांसी, डा० आर० एस० यादव, निदेशक, आई०आई०एस०डब्ल्यू०सी०, दतिया, डा० जे०वी०एन० प्रसाद, राष्ट्रीय पी०आई०, निकरा, आई०सी०ए०आर०, हैदराबाद, डा० आनन्द सिंह, सह निदेशक, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा एवं डा० निशी राय, अध्यक्ष, के०वी०के०, झांसी के साथ निकरा गांव गांधी नगर, विरगुवां एवं बावल टांढ़ा विकास खण्ड- बड़ागांव, झांसी के ६० किसानों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा० एस०के० चौधरी, उपमहा निदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन) द्वारा किसानों को सिंचाई करने और अच्छी फसल उत्पादन करने हेतु पानी का संरक्षण करने का आग्रह किया गया जोकि निकरा योजना के प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के अन्तर्गत कुओं की रिचार्जिंग, बन्धियों का निर्माण, चैक डैम का जीर्णोधार आदि करके किया जा रहा, जो कि आज समय की मांग है, पानी का संरक्षण करके ही भविष्य को सुरक्षित किया जा सकता है, (जल है तो कल है)। कार्यक्रम में के०वी०के०, झांसी के प्रयासों कृषि में लगे नवयुव को देख प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि नवयुवको को कृषि मे रूचि लेनी होगी तभी गावों की तश्वीर बदलेगी। कार्यक्रम में निकरा गांव गांधीनगर, बिरगुवां और बावल टांढा के किसानों को सिंचाई पाईप-७५, स्प्रींकलर सेट-३२ ओर लपेटा पाईप-१५० का वितरण और किसानों को वितरित करने वाले दो फेल्डर- खीरे की फसल में एकीकृत रोग एवं कीट प्रबन्धन और मूंगफली में एकीकृत रोग एवं कीट प्रबन्धन का विमोचन मुख्य अतिथि डा० एस०के० चौधरी और उपस्थित वैज्ञानिक/अधिकारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के वैज्ञानिक डा० हिमांशु सिंह, डा० आदेश कुमार, डा० अतीक अहमद, मो० रमजान, एस०आर०एफ०, निकरा, ए०के० सोलंकी एवं मनोज कुमार जैन आदि का सहयोग रहा।

कानपुर, रविवार 10 अक्टूबर, 2021
** लाल संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य 2.50 रुपया
हिन्दी जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय
वाराणसी | गोरखपुर | प्रयागराज
कानपुर (झांसी) | लखनऊ
आगरा | बरेली | पटना
रांची (धनबाद संस्करण)
जमशेदपुर
online Edition
www.ajhindidaily.com
आज

10 रोहित शर्मा
टीम सामूहिक रूप से विफल रही

शाहरुख खान 12
बायजूस ने सारे एड रोके

तापमान अधिकतम 34.6 डि.से. न्यूनतम 23.0 डि.से. आर्द्रता- 82-46%

समाज के हर तबके को ऊपर उठाने की आवश्यकता है:अरुणाचलम

जनजातीय कृषि पर कार्यक्रम आयोजित

महिला को सिलाई मशीन प्रदान करते हुए। छाया-आज

(आज समाचार सेवा)
झांसी, ९ अक्टूबर। केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव व्याख्यान श्रृंखला के तहत जनजातीय कृषि पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एस. के. चौधरी, उप महानिदेशक(प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने कहा कि जो खेती हमारे पूर्वज, वनवासी और जनजातीय बंधु करते आए हैं उस खेती में आज की बदलती हुई जलवायु परिस्थितियों में ज्यादा टिकाऊपन है। उन्होंने कहा कि पारंपरिक खेती की फसलों में जो जैव विविधता पाई जाती है उसको संरक्षण, सुधार एवं बढ़ावा देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. अनिल कुमार, निदेशक (शिक्षा), रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी ने अपने व्याख्यान में जनजातीय कृषि के महत्व के बारे में बताया और कहा कि जनजातीय कृषि में कम से कम रसायनों का प्रयोग होता है और यह एक प्रकार से जैविक खेती की तरह ही होती है। इसलिए पोषण सुरक्षा बदलती जलवायु परिस्थितियों में टिकाऊपन हेतु इस तरह की पारंपरिक खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
संस्थान के निदेशक डॉ. अरुणाचलम ने सभी से आह्वान करते हुए कहा की समाज के हर तबके को ऊपर उठाने की आवश्यकता है और विशेष रुप से अनुसूचित जाति और जनजाति के किसानों को कृषि की नई तकनीकीओं के माध्यम से उनकी आजीविका सुधारने पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति के महिला तथा पुरुष किसानों को आजीविका सुधारने हेतु कपड़ा सिलाई मशीन भी वितरित की गई।
डॉ. चौधरी झाँसी में तीन दिवसीय दौरे पर आए हैं यहां इन्होंने केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान में चल रहे शोध कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान डॉ. चौधरी ने समन्वित कृषि प्रणाली में पशुधन और मुर्गी पालन इकाई तथा मॉडल नर्सरी का भी उद्घाटन किया। इसके अलावा संस्थान के वैज्ञानिकों से विस्तार में शोध कार्यों के बारे में चर्चा की और इस पर बल दिया कि हमारा शोध कार्य सीधे किसानों को फायदा पहुंचाने के लिए होना चाहिए। इस दौरान उन्होंने संस्थान में चल रहे राजभाषा की कार्य प्रगति का भी मूल्यांकन किया।
कार्यक्रम की शुरुआत आइ.सी.ए.आर. कुलगीत से हुई तथा डॉ. ए. के. हाण्डा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान के निर्देशक डॉ. अमरेश चंद्रा एवं रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी के प्रोफेसर, भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान के दतिया अनुसंधान केंद्र के इंचार्ज डॉ. आर. एस. यादव एवं कृषि विज्ञान केंद्र, झाँसी के वैज्ञानिक एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति के किसान भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. इन्दर देव एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. आशाराम ने किया

संडे
कानपुर
10 अक्टूबर • 2021

राष्ट्रीय सहारा

निर्बाध समुद्री संपर्क हमारी प्राथमिक जरूरत
पेज-13

फेस्टिव सीजन में बनाएं सपनों का घर
पेज-15

******+ पृष्ठ 16, मूल्य ₹ 3.00
राष्ट्रीयता ■ कर्त्तव्य ■ समर्पण
डाक संस्करण
■ कानपुर ■ नई दिल्ली ■ लखनऊ ■ गोरखपुर ■ पटना ■ देहरादून ■ वाराणसी से प्रकाशित

पारंपरिक खेती को संरक्षण, सुधार व बढ़ावा देने की आवश्यकता

केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान का आजादी के अमृत महोत्सव के तहत कार्यक्रम

झांसी (एसएनबी)। केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव व्याख्यान श्रृंखला के तहत जनजातीय कृषि पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एसके चौधरी, उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने कहा कि जो खेती हमारे पूर्वज, वनवासी और जनजातीय बंधु करते आए है उस खेती में आज की बदलती हुई जलवायु परिस्थितियों में ज्यादा टिकाऊपन है।

झांसी : सिलाई मशीन वितरित करते संस्थान के पदाधिकारी। *फोटो : एसएनबी*

उन्होंने कहा कि पारंपरिक खेती की फसलों में जो जैव विविधता पाई जाती है उसको संरक्षण, सुधार एवं बढ़ावा देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. अनिल कुमार, निदेशक (शिक्षा), रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कपि विश्वविद्यालय झांसी ने अपने व्याख्यान में जनजातीय कृषि के महत्व के बारे में बताया और कहा कि जनजातीय कृषि में कम से कम रसायनों का प्रयोग होता है और यह एक प्रकार से जैविक खेती की तरह ही होती है। इसलिए पोषण सुरक्षा बदलती जलवायु परिस्थितियों में टिकाऊपन हेतु इस तरह की पारंपरिक खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। स्थान के निदेशक डॉ. अरुणाचलम ने सभी से आह्वान करते हुए कहा की समाज के हर तबके को ऊपर उठाने की आवश्यकता है और विशेष रुप से अनुसूचित जाति और जनजाति के किसानों को कृषि की नई तकनीकीओं के माध्यम से उनकी आजीविका सुधारने पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति के महिला तथा पुरुष किसानों को आजीविका सुधारने हेतु कपड़ा सिलाई मशीन भी वितरित की गई। डॉ. चौधरी झाँसी में तीन दिवसीय दौरे पर आए है यहां इन्होंने केंद्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान में चल रहे शोध कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान डॉ. चौधरी ने समन्वित कृषि प्रणाली में पशुधन और मुर्गी पालन इकाई तथा मॉडल नर्सरी का भी उद्घाटन किया। कार्यक्रम की शुरुआत आईसीएआर कुलगीत से हुई तथा डॉ. एके हाण्डा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. इन्दर देव एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. आशाराम ने किया।